www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जो स्वीकारें, उसे विवेक की कसौटी पर कस लें

-ब्रह्मवर्चस्

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI SANDIPBHAI PATEL,
MOHADEL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जो स्वीकार उसे विवेक की कसौटी पर कस लें

विचार विज्ञान अनेक भागों में बँटा हुआ है। हर विषय विभाग में अनेकानेक मान्यताएँ प्रचलित हैं। राजनीति में प्रजातन्त्र, राजतन्त्र, साम्यवाद, अधिनायकवाद, उपनिवेशवाद, पूँजीवाद आदि कितनी ही मान्यताएँ हैं और उनका प्रयोग न केवल प्राचीनकाल में होता था, वरन् आज भी उनका विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलन है। इन सभी में गुण-दोष हैं। गुणों की प्रशंसा और अवगुणों की निन्दा करने का सही प्रयोजन तर्क, तथ्य, प्रमाण और उदाहरण सामने रखते हुए दूरदर्शी विवेक बुद्धि से ही हो सकता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

धर्मक्षेत्र में अनेकों सम्प्रदायों, उपसंप्रदायों का प्रचलन है। हिन्दुओं में, विभिन्न सम्प्रदाय-उपसम्प्रदायों की शाखाएँ—प्रशाखाएँ प्रायः ६०० गिनी गई हैं। इसके अतिरिक्त, ईसाई, मुसलमान, यहूदी, पारसी, बौद्ध आदि अन्यान्य सम्प्रदाय भी हैं। उन्हें मानने वाले अपने-अपने मतों की अच्छाइयाँ तथा दूसरों की बुराइयाँ बताते हैं, ऐसी दशा में सामान्य बुद्धि बड़े असमंजस में पड़ती है कि जब जिसकी प्रशंसा सुनी जाती है, तब वही ठीक मालूम पड़ता है और जब निन्दा सुनने का अवसर आता है, तब वह भी गलत प्रतीत नहीं होता। ऐसी दशा में अपना निर्णय क्या हो? इनमें से किसे पसन्द किया जाय?

दर्शन शास्त्र के मतभेद भी ऐसे ही हैं। हिन्दू दर्शनों में योग, सांख्य, न्याय-वेदान्त, वैशेषिक, मीमांसा प्रसिद्ध हैं। चार्वाक दर्शन जैसे कई, अलग हैं। जैन और बौद्ध दर्शनों की शाखा—प्रशाखाएँ अलग हैं। इसके अतिरिक्त विदेशों के दर्शन शास्त्र अनेकों हैं। उन सभी के प्रतिपादन कर्त्ता सही सिद्ध करते हैं और विरोधी जब काटने खड़े होते हैं, तो उन्हें निरस्त करने में भी प्रतिपादन के ढेर लगा देते हैं। ऐसी दशा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में फिर वही कठिनाई सामने आती है कि इनमें से किन्हें उपयुक्त और किन्हें अनुपयुक्त माना जाय।

प्रथा—परम्पराओं के संबंध में भी यही बात है। अकेले हिन्दुस्तान में ही—प्रान्तों, क्षेत्रों और जातियों के हिसाब में इतनी प्रथाएँ प्रचलित हैं। उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान में लड़के बिकते हैं और दहेज माँगा जाता है। इसके विपरीत पहाड़ी प्रदेशों तथा कुछ जातियों में लड़के वाले लड़की के बदले पैसा देते हैं। जैन जातियों में से अधिकांश में यही रिवाज है। इनमें से हर पक्ष अपने प्रचलन की पुष्टि करते हैं और उन्हें सही भी सिद्ध करते हैं। मांसाहारी और शाकाहारी दोनों ही अपने-अपने पक्ष की दलीलें तब प्रस्तुत करते हैं, जब कुछ समझते और कहते नहीं बन पड़ता कि किसका पक्ष किस हद तक गलत माना जाय।

परस्पर विरोधी मत-मतान्तरों को देखते हुए सामान्य बुद्धि चकराने लगती है। चुनाव के दिनों में जब विभिन्न पार्टियाँ अपने घोषणा-पत्र प्रकाशित करतीं हैं और प्रत्याशी लोग जब अपने-अपने गुणों और आश्वासनों का बखान करते हैं, तो सूझ नहीं पड़ता कि इनमें से किस पर अविश्वास किया जाय। यदि सभी को सही या गलत माना जाय, तो फिर अपने एक वोट को किसके पक्ष में डाला जाय?

लोगों की अपनी-अपनी मान्यताएँ पूर्व प्रथा-प्रचलनों के सम्पर्क में रहने से अथवा इन दिनों अपने पास-पड़ोसियों या कुटुम्बी-सम्बन्धियों को जो कुछ करते देखते हैं। मन उसी ओर ढुलक जाता है। जिस ओर अपना भीतरी झुकाव हो, उसके पक्ष में कुछ न कुछ तर्क निकल आते हैं। बुद्धि का निर्णय औचित्य के पक्ष में हो इसकी कोई गारन्टी नहीं। वह अभिरुचि वाले पक्ष को सही बताने और अपनाने का फैसला करती है। वकील तो यही करते हैं। एक मुकदमा उनके पास अपराधी मुअक्किल का हो, तो उसे छुड़ाने के लिए दलीलों, कानूनों और नजीरों का ढेर लगा देते हैं। दूसरा मुकदमा यदि उसका हो, जिसे अपराधियों द्वारा सताया गया है, तो वकील इस बात पर सारा जोर लगा देगा कि अपराधी को सजा मिलनी चाहिए। दोनों मुकदमों में घटनाएँ एक जैसी होने पर भी एक ही वकील दो तरह के रुख अपनाता है। उसका उद्देश्य इतना भर होता है कि उसका मुअक्किल जीते। बुद्धि अपनी मान्यता के पक्ष में निर्णय देती है। डाकू अपनी बुद्धि को डकैती में—सफलता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलने के उपाय सोचने में और अपनाने में—अपनी सारी क्षमता लगा देता है। जबकि दूसरा पक्ष जिसे आत्मरक्षा करनी है, वह भी इस तरह के उपाय सोचता है कि बचाव सम्भव हो सके।

प्रचलनों की संख्या अगणित है। उनके आधार पर ढली हुई मान्यताएँ भी असीम हैं। यह सभी सही या उचित हों—ऐसा हो नहीं सकता। एक सही होगा तो उसका विरोधी दूसरा पक्ष गलत होना चाहिए। सही और गलत के बीच में समझौता नहीं हो सकता। अपनी स्थिति कमजोर हो तो अनुचित से झगड़ने में आफत आने के डर से चुप रहा जा सकता है, पर दोनों पक्षों को सही नहीं माना जा सकता। एक सही है तो प्रतिपक्षी गलत होना ही चाहिए। यदि अन्तरात्मा जीवित है, तो सही पक्ष का ही समर्थन किया जाय। मुँह देखकर दोनों की हाँ में हाँ मिलाने लगा जाय तो, यह चापलूसों, सिद्धान्त हीनों, और मतलबी—स्वार्थियों जैसा आचरण होगा। इस प्रकार के दोगले लोग अपनी और दूसरों की आँखों में गिर जातें हैं। ऐसा आत्म-हनन मानवी गरिमा के प्रतिकूल ही माना जायेगा।

परस्पर विरोधी मान्यताएँ जन समाज में प्रचलित हैं। इनमें से सही का चुनाव उनके पक्षधरों के समर्थन में प्रस्तुत किये जाने वाले प्रतिपादनों के आधार पर नहीं हो सकता। नीर-क्षीर विवेक तो अपने को ही अपनाना होगा। इसके लिए कसौटी निर्धारित करनी चाहिए, अन्यथा हवा के झोंके के साथ उड़ने वाले पत्रों की तरह अपनी स्थिति भी होगी। सोना नकली भी होता है और असली भी। दोनों के सामने आने पर उनकी परख दो आधारों पर होती है—एक कसौटी पर घिसकर दूसरे आग में तपाकर। यही दो आधार हैं, जो असली-नकली का अन्तर बताते हैं। खरीदने वाला इन अन्तरों की साक्षी लेकर ही सही वस्तु लेता है और गलत को गले बाँध लेने और पीछे पछताने से बच जाता है।

सही निर्णय के लिए न्यायाधीश जैसी पूर्वाग्रह रहित और निष्पक्ष मनः स्थिति बनाई जानी चाहिए। अपनी प्रथाओं और मान्यताओं को कुछ समय के लिए एक कोने पर उठाकर रख देना चाहिए। न्यायाधीश यही करता है। वह निष्पक्ष बनता है। इसके बाद दोनों पक्षों के तर्क, तथ्य और प्रमाण ध्यानपूर्वक सुनता है। उनमें से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

न तो किसी का पूर्ण विश्वास करता है और न अविश्वास। मात्र विवेक और औचित्य का आश्रय लेकर न्याय—निष्कर्ष पर पहुँचता है। इसी आधार पर अपना फैसला घोषित करता है।

हमें भी न्यायनिष्ठ निर्णय पर पहुँचना चाहिए और परिस्थितियों को ध्यान में रखना चाहिए। अनेक प्रचलन—प्रतिपादन किसी समय, किन्हीं लोगों के लिए, किन्हीं परिस्थितियों के कारण उचित रहे होंगे, पर आज वैसी परिस्थितियाँ न रहने के कारण उनका औचित्य नहीं रह जाता। एक क्षेत्र के निवासियों के लिये जो उचित है, वह दूसरे लोगों के लिए अनुचित हो सकता है। उत्तरी ध्रुव के निवासी ऐस्किमों लोग वहाँ वृक्ष—वनस्पति न होने के कारण मछलियों का शिकार करते और उन्हीं के सहारे जीवित रहते हैं। वनवासी आदिम सभ्यता के लिए लोग कृषि के अभ्यस्त नहीं है और न उसका ज्ञान-अनुभव ही है। ऐसी दशा में वे वर्षा के दिनों में उपजे थोड़े—बहुत अन्न पर साल भर का गुजारा नहीं कर सकते। उन परिस्थितियों में आखेट करते और पेट पालते हैं, किन्तु जिन लोगों के पास प्रर्याप्त खेती है पर्याप्त अन्न उपजते हैं, उनके लिए मांसाहार पाप कहा जायेगा। अरब के रेगिस्तानों में रेतीली आँधियाँ चलती हैं, वहाँ बड़ों को, विशेषतया बच्चों को आंखों में धूल भरने की आशंका रहती है वहाँ बुरका ओढ़ने का औचित्य है। टम्बक टू क्षेत्र के आस-पास मर्द घर में रहते और बच्चे पालते हैं, इसलिए वहाँ मर्दों को भी पर्दा ओढ़ना पड़ता है और अपनी तथा बच्चों की आँखे बचानी पड़ती हैं। हिन्दुस्तान में वैसी समस्या नहीं है, इसलिए गुजरात, महाराष्ट्र और दक्षिण भारत में महिलाएँ बिलकुल पर्दा नहीं करतीं। उत्तर भारत के लोग मुसलमानी शासन के अन्तर्गत और सम्पर्क में रहे हैं, इसलिए वहाँ पर्दे का रिवाज देखा—देखी चल पड़ा। सामन्ती मध्यकाल में शासकों और लुटेरों की आँखे सयानी लड़कियों पर लगी रहती थी। उस मुसीबत से बचाने के लिए उन दिनों बाल—विवाह का प्रचलन सुरक्षा की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए आरम्भ किया गया। आज वैसी विवशता नहीं है, तो उस प्रथा के लिए आग्रह करने का कोई औचित्य नहीं। अब केरल आदि प्रान्तों में लड़कियाँ २०—२५ वर्ष से कम की आयु में विवाह नहीं करतीं। वहाँ अधिक विद्या पढ़ने का लड़कियों में उत्साह है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रथा—प्रचलनों के सम्बन्ध में अनेक बातें ऐसी हैं, जो समय की—क्षेत्र की—आवश्यकता देखते हुए चली हैं। आवश्यक नहीं कि भिन्न परिस्थिति वाले क्षेत्रों में भी देखा—देखी या परम्परा को अपनाते हुए उन्हीं रिवाजों का समर्थन किया जाय। योरोप जैसे ठंडे क्षेत्रों में कसे हुए कपड़े ही ठीक पहने जाते हैं. पर हिन्दुस्तान जैसे गरम देश में ढीले और थोड़े कपड़े ही ठीक पड़ते हैं। रीति-रिवाजें प्रायः ऐसी ही हैं, जो समय, क्षेत्र तथा परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए चलाई गईं। आवश्यक नहीं कि परिस्थितियाँ बदल जाने पर भी, उन्हें अपनाया जाय और पुरातन परंपरा होने के कारण उसे अपनाये रखा जाय। कुछ वस्तुएँ पुरानी भी अच्छी हो सकती थीं, कुछ नई उत्तम होती हैं। आसव-अरिष्ट पुराने होने पर अधिक गुणकारी होते हैं, पर घी, दूध आदि को पुराना किया जाय, तो उनमें बदबू आने लगेगी और विषैलापन आ जायेगा। पुराने मकान जीर्ण-शीर्ण हो जाते हैं। वयोवृद्ध व्यक्ति कड़े शारीरिक श्रम के योग्य नहीं रहते। लड़की की शादी के लिए उठती उम्र के लड़के तलाश किये जाते हैं, पर पंचायतों के चुनाव में अनुभवी वयोवृद्धों को पसन्द किया जाता है। इस प्रकार एक बात, एक जगह, एक काम के लिए जो उपयुक्त हो सकती है, वही दूसरे काम या समय के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती है। सेना में भर्ती के लिए पहलवान उपयुक्त हो सकते हैं, किन्तु लोक सभा में सांसद चुनने के लिए दूसरी योग्यताएँ होनी चाहिए।

भिन्नताओं के मध्य आज की परिस्थितियों के अनुरूप क्या है? न्याय और औचित्य की कसौटी पर कौन से तर्क, तथ्य और प्रमाण मानने योग्य हैं—यह देखा जाना चाहिए। हर उचित—अनुचित बात के समर्थन में बहुत कुछ कहा जा सकता है, पर देखना यह है कि दूरदर्शी विवेकशीलता की कसौटी पर खरा क्या बैठ रहा है। विवेक की मान्यता सर्वोपरि है। उसी को प्रज्ञा कहा जाता है। बुद्धिमत्ता—चतुरता की तुलना में यह कसौटी उपयुक्त है कि दूरदर्शिता, न्याय और औचित्य कहाँ है?

कुछ कार्य ऐसे होते हैं, जो तात्कालिक लाभ की दृष्टि से, मित्र—कुटुम्बियों—संबंधियों की पसंदगी की दृष्टि से उपयुक्त लगते हैं और उनमें तात्कालिक लाभ दीखता है, पर दूरगामी परिणामों की दृष्टि से वे हानिकारक सिद्ध होते हैं—ऐसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दशा में दूरगामी परिणामों को ही मान्यता देनी चाहिए। अपने लड़के की बोली चढ़ाकर अधिक दहेज वसूल किया जा सकता है, पर कुछ ही दिन बाद जब अपनी कई लड़कियों पर उतना ही खर्च करना पड़ेगा, तब कई गुना घाटा पड़ेगा। उस दशा में दहेज न लेने या देने के पक्ष में कोई तर्क भी नहीं प्रस्तुत किया जा सकता, क्योंकि जब लड़के की कीमत वसूल करली गई, तो बाद में उसी आधार पर अपना घर खाली करा लिये जाने पर पश्चात्ताप किस बात का ?

अपराधी दुष्प्रवृत्तियाँ, नशेबाजी, व्यभिचार आदि तात्कालिक मौज-मजे की दृष्टि से आकर्षक एवम् लाभदायक दीखते हैं। संयमशीलता, अध्ययन परायण, तप-श्चर्या जैसे कार्य, कष्टसाध्य और घाटे के लगते हैं, पर बाद के परिणाम को ध्यान में रखा जाय तो, मौज-मजा अनेक गुनी हानि प्रस्तुत करता है और श्रेष्ठ कार्यों के लिए आरम्भ में उठाई गई कठिनाई बीज बोने में खर्च करके फसल काटने में अनेक गुना लाभ उठाने की तरह, दूरदर्शितापूर्ण सिद्ध होती है।

मिष्ठान्न—पकवानों की दावत में पेट से ज्यादा ढूंस लेने वाले, जब अपच, उल्टी, दस्त आदि के शिकार होते हैं, तो आरंभ की चतुराई पीछे हानि प्रतीत होती है कि वह कितनी हानिकारक थी। अन्य इन्द्रियों की लिप्सा भी दाद को जोरों से खुजाते समय जैसी अच्छी लगती है, पर थोड़े ही समय में उस भूल पर पछतावा करना पड़ता है। कुत्ता सूखी हड्डी चबाता है, उससे जब जबड़ा छिल जाता है, तो खून का जायका मिलने लगता है। कुत्ता समझता है कि यह हड्डी में से निकलने वाला स्वाद है और जोरों से चबाकर अधिक मजा लूटना चाहता है, पर जबड़े छिल जाने पर पता चलता है कि सूखी हड्डी से खून का जायका पाना कितनी भूल थी। कामुकता के वशीभूत होकर लोग अपना ही सर्वनाश करते हैं और दूर के परिणाम को भुला देने के कारण दुर्बलता, रुग्णता और अकाल मृत्यु के ग्रास बनते हैं।

किसान, विद्यार्थी, पहलवान आरम्भिक दिनों में कठोर श्रम करते हैं और खर्च भी सहन करते हैं, पर जब सम्पन्नता, विद्वत्ता और बलिष्ठता के रूप में श्रेयस्कर परिणाम सामने आते हैं, तब प्रतीत होता है कि आरम्भ में जो बातें घाटे की, कष्टकर प्रतीत होती थीं. वे समयानुसार अपना प्रतिफल सामने लाईं और सुखदायक सिद्ध हुईं। लोक सेवी, आत्मसंयमी, परमार्थ-परायण आरम्भ में मूर्ख जैसे लगते हैं, जब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्म संतोष, लोक सम्मान और दैवी अनुग्रह का लाभ होता है, व्यक्ति को अभिनन्दनीय और अनुकरणीय बनाते हैं, तब प्रतीत होता है कि आरम्भ में जिसे मूर्ख समझा जाता था, वह समय आने पर उच्चस्तरीय बुद्धिमत्ता सिद्ध हुई। आलसी-प्रमादी आरम्भ में मौज-मजा करते हैं, पर जब देखते हैं कि उनके साथी पुरुषार्थ, साहस, श्रम और मनोयोग के सहारे कितने ऊँचे चढ़े—कितने आगे बढ़े, तब उन्हें पश्चात्ताप होता है कि अपनाया गया आलस कितना महँगा पड़ा। अपनी दिनचर्या विनिर्मित करने, बुरी आदतों को छोड़ने, प्रगतिशील कार्यक्रमों को अपनाते समय आरम्भ में बड़ा अनख लगता है, पर जब कुछ दिन में गाड़ी लाइन पर चल पड़ती है, तब ज्ञात होता है कि जीवन कितना प्रगतिशील और आन्तरिक स्तर, कितना समुन्नत सुखी और सन्तोष से भरा-पूरा बनता चला जा रहा है।

प्रचलनों में अनेकानेक मान्यताएँ तथा प्रथाएँ इस संसार में बिखरी पड़ी हैं। उनमें से प्रत्येक को दूरदर्शी—विवेकशीलता की कसौटी पर कसना चाहिए और देखना चाहिए कि परिणाम व्यक्ति और समाज के सामने किस रूप में आवेंगे। देखना चाहिए कि न्याय और औचित्य में किसका पलड़ा भारी पड़ता है। बिना किसी पूर्वाग्रह के हमें ऐसे ही विवेक, न्याय और अन्तःकरण का निर्णय स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए। इसी में श्रेयस्कर प्रज्ञा का समावेश है। यही स्वीकार करने योग्य है।

क्रमांक २३५/युगान्तर चेतना प्रेस, शांति कुञ्ज, हरिद्वार। मूल्य-४० पैसा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org